

धोरण : 9

हिन्दी

पाठ : 17

तुलसी के पद स्वाध्याय



प्रश्न 1. निम्नलिखित प्रश्नों के एक-एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

(1) तुलसीदास के मत से कौन पतितपावन हैं?

➤ **तुलसीदासजी के मत से उनके स्वामी श्रीराम पतितपावन हैं।**

(2) भगवान को अति दीन कैसे लगते हैं?

➤ **भगवान को अति दीन प्रिय लगते हैं।**

(3) भगवान ने हठ करके किनका उद्धार किया?

➤ भगवान ने हठ करके पक्षी, मृग, ब्याध, पाषाण, वृक्ष और यवन का उद्धार किया।

(4) माया के प्रति विवश होकर कौन-कौन सोचते हैं?

➤ देवता, राक्षस, मुनि, नाग, मनुष्य - ये सब माया के प्रति विवश होकर सोचते हैं।

(5) प्रभु दानी है तो कवि क्या है?

➤ **प्रभु दानी हैं, तो कवि भिखारी हैं।**

(6) कवि पाप पुंजहारी किसे कहते हैं?

➤ **कवि भगवान श्रीराम को 'पाप पुंजहारी' कहते हैं।**

प्रश्न 2. विस्तार सहित उत्तर लिखिए :

(1) तुलसीदासजी प्रभु के चरणों को छोड़कर कहीं ओर क्यों नहीं जाना चाहते हैं?

➤ तुलसीदासजी के अनुसार प्रभु श्रीराम पतितपावन हैं। वे दीन-दुःखी जनों के प्रेमी हैं। उन्होंने हठ करके अनेक दुष्टों का उद्धार किया है। पक्षी, मृग, व्याध, पाषाण, वृक्ष और यवन का उद्धार करने में भी उन्होंने देर नहीं की। बाकी देवता, मुनि और मनुष्य आदि माया से वशीभूत हैं। उनसे

संबंध जोड़ने का अर्थ नहीं है। श्रीराम जैसी दया और सामर्थ्य और किसी में नहीं है। इसलिए तुलसीदासजी अपने प्रभु के चरणों को छोड़कर और कहीं जाना नहीं चाहते।

(2) तुलसीदास ने अपने और भगवान के बीच कौन-कौन से संबंध जोड़े हैं? क्यों?

- **तुलसीदास किसी भी रूप में भगवान से जुड़े रहना चाहते हैं। इसीलिए वे कहते हैं कि भगवान दयालु हैं तो वह दीन अर्थात् दया के पात्र हैं। यदि प्रभु दानी हैं, तो तुलसीदासजी भिखारी हैं। प्रभु पापों का नाश करते हैं, तो तुलसीदास जैसा कोई पापी नहीं। प्रभु अनाथों के नाथ हैं, तो तुलसीदासजी जैसा कोई अनाथ नहीं। यदि प्रभु दुःख दूर करते हैं, तो तुलसीदासजी जैसा कोई दुःखी नहीं हैं।**

- प्रभु ब्रह्मा हैं, तो तुलसीदास जीव हैं। प्रभु स्वामी हैं, तो तुलसीदासजी सेवक हैं। भगवान ही तुलसीदास के माता, पिता, गुरु, सखा आदि सबकुछ हैं।
- इस प्रकार तुलसीदास ने भगवान से अपने अनेक संबंध जोड़े हैं। इसका कारण यह है कि वे किसी भी संबंध से भगवान की शरण पाना चाहते हैं।

(3) 'तोहि-मोहि नाते अनेक, मानिए जो भावे' का भावार्थ स्पष्ट कीजिए।

- **तुलसीदास ने भगवान से अपने अनेक नाते बताए हैं। वे भगवान से कहते हैं कि इनमें से जो नाता आपको स्वीकार हो, उस नाते से मेरे से जुड़े रहें। तुलसी जानते हैं कि जब तक भगवान एक निश्चित नाता नहीं होता तब तक भक्ति करने में आनंद नहीं आता। एक नाता**

जुड़ जाने से ही भक्ति में गहराई आती है। उससे भगवान को एक निश्चित संबोधन से पुकारने में सरलता होती है और अपनत्व बढ़ाने में मदद मिलती है। इसलिए तुलसीदास भगवान से प्रार्थना करते हैं कि वे उनसे कोई एक निश्चित नाता बनाकर उन्हें अपना लें।

प्रश्न 3. भावार्थ स्पष्ट कीजिए :

(1) देव, दनुज, मुनि, नाग, मनुज, सब मायाबिबस बिचारे। तिनके हाथ दासतुलसी प्रभु, कहा अपनपौ हारे॥

➤ हे भगवान राम! देवता, राक्षस, मुनि, हाथी, वृक्ष, यवन, देवता आदि सब माया के वशीभूत हैं। इनमें मुझ जैसों के प्रति अपनापन नहीं हो सकता। इसलिए इनसे किसी तरह की सहायता की आशा करना व्यर्थ

है। हे प्रभु, मायारहित केवल आप ही हैं। मुझ जैसे
भक्तों का खयाल केवल आप ही रख सकते हैं। इसलिए
आपके सेवा में और किसी की शरण में जाने की बात
नहीं सोच सकता।

(2) नाथ तू अनाथ को, अनाथ कौन माँसो?

मो समान आरत नहि, आरतिहर तोसो।

- तुलसी भगवान से कहते हैं कि जिनका संसार में कोई रक्षक नहीं है, उनकी रक्षा आप ही करते हैं। मेरे जैसा और कोई अनाथ नहीं है। इसलिए आपको ही मेरी रक्षा करनी होगी, मेरे समान कोई दुःखी नहीं है। अपने दुःख दूर करने के लिए मैं आपको ही पुकारूंगा, क्योंकि आपके समान दुखियों के दुःख हरनेवाला दूसरा कोई नहीं है।

प्रश्न 4. समानार्थी शब्द लिखिए :

- | | |
|-----------|----------|
| (1) अधम | - नीच |
| (2) दनुज | - राक्षस |
| (3) मनुज | - मनुष्य |
| (4) पातकी | - पापी |
| (5) आरत | - दुःखी |
| (6) चेरो | - दास |

प्रश्न 5. शब्दसमूह के लिए एक शब्द दीजिए :

(1) पापियों का उद्धार करनेवाला ईश्वर

➤ **पापोद्धारक**

(2) जिसकी रक्षा करनेवाला कोई न हो

➤ **अनाथ**

Thanks



For watching